Khushu W Khuzu Waali Namaz (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 352
Weekly Booklet : 352

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की एक क़िस्त़

ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़

सफ़ह़ात 20

आग लग गई मगर नमाज़ में मश्ग़ूल रहे ! 03
जन्नत वाजिब होने का मत्लब 06
नमाज़ में इधर उधर देखने का मस्अला 13
नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُستَطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **खुशूओ खुज़ूअ वाली नमाज़**

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम **1445** हि., अप्रैल **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़**"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : "**ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज**" पढ़ या सुन ले उस को सज्दों की लज़्ज़तें अ़त़ा फ़रमां, उस की तमाम नमाज़ें क़बूल कर और उसे दोनों जहानों की भलाइयां दे । اٰمين بِجاہِ خاتَمِ النّبِيّٖن صلى الله عليه واله وسلم

दुरूद शरीफ़ का परचा काम आ गया (वाक़िआ़)

क़ियामत के दिन किसी मुसल्मान की नेकियां मीज़ान (या'नी तराज़ू) में हलकी हो जाएंगी तो गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक परचा अपने पास से निकाल कर नेकियों के पलड़े में रख देंगे, तो उस से नेकियों का पलड़ा वज़्नी हो जाएगा । वोह अ़र्ज़ करेगा : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप कौन हैं ? **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : "मैं तेरा नबी **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह **दुरूदे पाक** है जो तू ने मुझ पर भेजा था ।"

(کتاب حسن الظن باللہ مع موسوعہ ابن ابی الدنیا، 1/92، حدیث:79 ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़

ख़ुशूअ़ के मा'ना हैं : "दिल का फ़े'ल और ज़ाहिरी आ'ज़ा (या'नी हाथ पांव) का अ़मल ।" (تفسیر کبیر، 8/259) दिल का फ़े'ल या'नी **अल्लाह**

1... येह मज़्मून किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 281 ता 288 और 292 ता 298 से लिया गया है ।

पाक की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और **नमाज़** में दिल लगा हो। और ज़ाहिरी आ'ज़ा का अ़मल या'नी सुकून से खड़ा रहे, इधर उधर न देखे, अपने जिस्म और कपड़ों के साथ न खेले और कोई अ़बस व बेकार काम न करे। (تفسیر کبیر،8/259،تفسیر مدارک،ص751،تفسیر صاوی،4/1356ماخوذاً)

नमाज़ में "ख़ुशूअ़" मुस्तह़ब है

अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नमाज़ में **ख़ुशूअ़** मुस्तह़ब है। (عمدۃ القاری،4/391،تحت الحدیث:741) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : नमाज़ का कमाल, नमाज़ का नूर, नमाज़ की ख़ूबी फ़ह्मो तदब्बुर व हुज़ूरे क़ल्ब (या'नी ख़ुशूअ़) पर है। (फ़तावा रज़विय्या, 6/205) मत़लब येह कि आ'ला दरजे की नमाज़ वोह है जो ख़ुशूअ़ के साथ अदा की जाए।

अल्लाह करीम पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** की आयत नम्बर 1 और 2 में इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ (پ18،المؤمنون:1-2)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।

"तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" जिल्द 6 सफ़्ह़ा 494 पर है : इस आयत में ईमान वालों को बिशारत (या'नी ख़ुश ख़बरी) दी गई है कि बेशक वोह **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से अपने मक़्सद में काम्याब हो गए और हमेशा के लिये जन्नत में दाख़िल हो कर हर ना पसन्दीदा चीज़ से नजात पा जाएंगे। (تفسیر کبیر،8/258-روح البیان،6/66ملتقطاً) मज़ीद सफ़्ह़ा 496 पर है : ईमान वाले ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा करते हैं, उस वक़्त उन के दिलों

में **अल्लाह** करीम का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन (या'नी ठहरे हुए पुर सुकून) होते हैं।

आग लग गई मगर नमाज़ में मश्ग़ूल रहे !

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुस्लिम बिन यसार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस क़दर तवज्जोह के साथ नमाज़ पढ़ते कि अपने आस पास की कुछ भी ख़बर न होती, एक बार नमाज़ में मश्ग़ूल थे कि क़रीब आग भड़क उठी लेकिन आप को एह़सास तक न हुवा ह़त्ता कि आग बुझा दी गई। (अल्लाह वालों की बातें, 2/447)

चार मुख़्तसर वाक़िआ़त

वाक़िआ़ 《1》 : सह़ाबिया, उम्मुल मुअमिनीन, तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से और हम आप से गुफ़्तगू कर रहे होते लेकिन जब **नमाज़** का वक़्त होता तो (हम ऐसे हो जाते) गोया आप हमें नहीं पहचानते और हम आप को नहीं पहचानते। (احیاء العلوم، 1/205)

वाक़िआ़ 《2》 : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه **नमाज़** में ऐसे होते गोया (गड़ी हुई) मेख़ (खूंटी) हैं। **वाक़िआ़ 《3》 :** बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان रुकूअ़ में इतने पुर सुकून होते कि उन पर चिड़ियां बैठ जातीं गोया वोह जमादात (या'नी बेजान चीज़ों) में से हैं। (احیاء العلوم، 1/228، 229) **वाक़िआ़ 《4》 :** बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत लोग **नमाज़** वाली हैअत (या'नी कैफ़िय्यत) पर उठाए जाएंगे या'नी **नमाज़** में जिस को जितना इत़्मीनानो सुकून ह़ासिल होता है उसी के मुत़ाबिक़ उन का ह़श्र (या'नी उठाया जाना) होगा।

(احیاء العلوم، 1/222)

अल्लाह पाक ऐसी नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता

अल्लाह पाक ऐसी **न**माज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में बन्दा अपने जिस्म के साथ दिल को ह़ाज़िर न करे। (احیاء العلوم، 1/470)

नमाज़ में आंसू बहते रहते

ह़ज़रते सईद तनूख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब **नमाज़** पढ़ते तो (इस क़दर रोते कि) रुख़्सार (या'नी गाल) से दाढ़ी पर मुसल्सल **आंसू** गिरते रहते। (احیاء العلوم، 1/470)

नमाज़ में ज़ाहिरी व बात़िनी ख़ुशूअ़ किसे कहते हैं

नमाज़ में ख़ुशूअ़ ज़ाहिरी भी होता है और बात़िनी भी, ज़ाहिरी ख़ुशूअ़ येह है कि नमाज़ के आदाब की मुकम्मल रिआ़यत की जाए मसलन नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और आंख के कनारे से किसी त़रफ़ न देखे, आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए, कोई अ़बस व बेकार काम न करे, कोई कपड़ा शानों (या'नी कन्धों) पर इस त़रह़ न लटकाए कि उस के दोनों कनारे लटक्ते हों (हां अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं), उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म की ह़रकात से बाज़ रहे। **बात़िनी ख़ुशूअ़** येह है कि **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और **नमाज़** में दिल लगा हो।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 6/496)

नमाज़ कैसी होनी चाहिये !

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 63 सफ़ह़ात की किताब "**आदाबे दीन**" के सफ़ह़ा 30 पर है : (नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिये कि) आ़जिज़ी और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की कैफ़िय्यत पैदा करे और हुज़ूरे क़ल्ब

(या'नी दिली तवज्जोह) के साथ **नमाज़** पढ़े, वस्वसों से बचने की कोशिश करे, ज़ाहिरी व बातिनी तौर पर तवज्जोह से **नमाज़** पढ़े, आ'ज़ा पुर सुकून रखे, निगाहें नीची रखे, (क़ियाम में) दायां (या'नी सीधा) हाथ बाएं (या'नी उलटे) हाथ पर रखे, तिलावत में ग़ौरो फ़िक्र करे, डरते हुए और ख़ौफ़ज़दा हो कर तक्बीर कहे, ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ रुकूअ़ व सुजूद करे, ता'ज़ीमो तौक़ीर के साथ तस्बीह़ (या'नी سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم व سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی) पढ़े और तशह्हुद इस त़रह़ पढ़े जैसे **अल्लाह** पाक को देख रहा है, (रह़मते ख़ुदावन्दी की) उम्मीद रखते हुए सलाम फेरे, इस ख़ौफ़ से पलटे (या'नी वापस हो) कि न जाने मेरी **नमाज़** क़बूल भी हुई है या नहीं ! और रिज़ाए इलाही त़लब करने की कोशिश करे । (आदाबे दीन)

ह़ज़रते ह़ातिमे असम की नमाज़ का अन्दाज़

ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से उन की नमाज़ के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "जब नमाज़ का वक़्त हो जाता है तो मैं पूरा वुज़ू करता हूं, फिर नमाज़ की जगह आ कर बैठ जाता हूं यहां तक कि मेरे तमाम आ'ज़ा (या'नी बदन के सब ह़िस्से) पुर सुकून हो जाते हैं, फिर नमाज़ के लिये खड़ा होता हूं और का'बए मुअ़ज़्ज़मा को अब्रूओं (Eyebrows) के सामने, पुल सिरात़ को क़दमों के नीचे, जन्नत को सीधे हाथ की त़रफ़ और जहन्नम को उलटे हाथ की त़रफ़, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को अपने पीछे ख़याल करता हूं और उस नमाज़ को अपनी आख़िरी नमाज़ तसव्वुर करता हूं । फिर उम्मीद व ख़ौफ़ की मिली जुली कैफ़िय्यत के साथ ह़क़ीक़तन तक्बीरे तह़रीमा कहता हूं, क़ुरआने करीम ठहर ठहर कर पढ़ता हूं । रुकूअ़

तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के साथ और सज्दा ख़ुशूअ़ के साथ करता हूं। बायां (Left) पांव बिछा कर उस पर बैठता हूं, दायां (Right) पांव खड़ा करता हूं ख़ूब **इख़्लास** से काम लेने के बा वुजूद येही ख़ौफ़ रखता हूं कि न जाने मेरी नमाज़ क़बूल होगी या नहीं !" (احياء العلوم، 1/206)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जन्नत वाजिब हो जाती है

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं : मैं ने **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप खड़े हो कर लोगों से येह इर्शाद फ़रमा रहे थे : "जो मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर ज़ाहिरो बात़िन की यक्सूई के साथ दो रक्अ़तें अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।" (مسلم، ص118، حدیث:553)

जन्नत वाजिब होने का मत़लब

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (जन्नत वाजिब हो जाती है) के बारे में फ़रमाते हैं : रब्बे (करीम) के फ़ज़्लो करम से इस त़रह़ कि दुन्या में उसे नेक आ'माल की तौफ़ीक़ मिलती है, मरते वक़्त ईमान पर क़ाइम रहता है, क़ब्रो ह़श्र में आसानी से पास होता है। ह़दीस का मत़लब येह नहीं कि सिर्फ़ वुज़ू कर लेने और तह़िय्यतुल वुज़ू के दो नफ़्ल पढ़ लेने से जन्नती हो गया, (और) अब किसी अ़मल की ज़रूरत न रही, (बल्कि) इस क़िस्म की अह़ादीस का येही मत़लब होता है (जो अभी बयान हुवा)। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/236)

ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ना गुनाहों का कफ़्फ़ारा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं : मैं ने **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जिस मुसल्मान पर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आए और वोह अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के **ख़ुशूअ़** के साथ नमाज़ पढ़े और दुरुस्त त़रीक़े से **रुकूअ़** करे तो वोह नमाज़ उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है जब तक कि वोह किसी कबीरा गुनाह का इरतिकाब न करे और येह (या'नी गुनाहों की मुआ़फ़ी का सिल्सिला) हमेशा ही होता है (किसी ज़माने के साथ ख़ास नहीं है)। (مسلم، ص116، حدیث:543)

रुकूअ़ से मुराद यहां पूरी नमाज़ है

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : **रुकूअ़** से मुराद **नमाज़** के तमाम अरकान हैं या'नी वोह **नमाज़** के तमाम अरकान अच्छी त़रह़ और **ख़ुशूअ़** के साथ अदा करे और तमाम अरकान अच्छी त़रह़ अदा करने का मत़लब येह होता है कि हर रुक्न पूरे त़रीक़े पर (सुन्नतों वग़ैरा का लिह़ाज़ करते हुए) अदा किया जाए। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) नमाज़ सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होगी, कबीरा (या'नी बड़े) गुनाहों के लिये नहीं, क्यूं कि कबीरा गुनाह नमाज़ से मुआ़फ़ नहीं होते (कबीरा गुनाहों की मुआ़फ़ी के लिये तौबा और उस के तक़ाज़े पूरे करने होंगे) और येह मत़लब नहीं है कि छोटे गुनाह सिर्फ़ उस वक़्त मुआ़फ़ होंगे जब बड़े गुनाह नहीं होंगे (बल्कि बड़े गुनाहों की मौजूदगी में भी छोटे गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे, येह (या'नी गुनाहों की मुआ़फ़ी का सिल्सिला) हमेशा ही होता है) या'नी अगर रोज़ाना भी उस से (مَعَاذَ اللّٰہ) सग़ीरा गुनाहों का सुदूर होता रहे और वोह फ़राइज़ पूरे त़ौर पर अदा करे तो हर फ़र्ज़ अपने से पहले के सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाया करेगा। (التیسیر، 2/358)

जान बूझ कर गुनाह करना

ऐ मुआ़फ़ी के त़लब गारो ! नमाज़ से सग़ीरा या'नी छोटे गुनाह मुआ़फ़ हो जाने से مَعَاذَاللّٰه कोई येह न समझे कि सग़ीरा गुनाह करते रहो और **नमाज़** पढ़ते रहो, मुआ़फ़ी मिलती रहेगी। याद रखिये! सग़ीरा गुनाह को सग़ीरा या'नी छोटा समझ कर करने से वोह सख़्त कबीरा गुनाह बन जाता है और सग़ीरा गुनाह को हलका जानना बा'ज़ सूरतों में कुफ़्र है। इस को समझने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की 692 सफ़्ह़ात की किताब, "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 385 ता 396 में से बा'ज़ "सुवाल जवाब" पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये !

गुनाह की ता'रीफ़

सुवाल : गुनाह की क्या ता'रीफ़ है ? नीज़ गुनाहे सग़ीरा और कबीरा कौन कौन से हैं ?

जवाब : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه पारह 27 **सूरतुन्नज्म** आयत नम्बर 32 के हिस्से ﴿اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَالْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं) के तह़त फ़रमाते हैं : गुनाह वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो और बा'ज़ अहले इ़ल्म ने फ़रमाया कि गुनाह वोह है जिस का करने वाला सवाब से मह़रूम हो बा'ज़ का क़ौल है : ना जाइज़ काम करने को गुनाह कहते हैं। (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 973) फ़क़ीहे मिल्लत, मुफ़्ती मुह़म्मद जलालुद्दीन अमजदी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "किसी वाजिब का एक बार तर्क करना

गुनाहे सग़ीरा (या'नी छोटा गुनाह) है बशर्ते़ कि बिला उ़ज़्रे शरई हो। जैसे एक बार तर्के जमाअ़त करना या एक बार दाढ़ी मुंडाना वग़ैरा। और गुनाहे सग़ीरा इसरार से गुनाहे कबीरा (या'नी बड़ा गुनाह) हो जाता है। शिर्क और कुफ़्र और हर ह़रामे क़त़ई का इरतिकाब गुनाहे कबीरा (या'नी बड़ा गुनाह) है और किसी फ़र्ज़े क़त़ई जैसे नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा का न अदा करना भी गुनाहे कबीरा है।'' وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, 2/510)

गुनाहे सग़ीरा पर इसरार के मा'ना

सुवाल : ''गुनाहे सग़ीरा **इसरार** से गुनाहे कबीरा हो जाता है'' इस में **इसरार** से क्या मुराद है ?

जवाब : ''इसरार'' का मा'ना है : मज़बूत़ बांधना, मज़बूत़ हो जाना, किसी के साथ ऐसा वाबस्ता होना कि उस से जुदा न हो सकना (तफ़्सीरे नई़मी, 4/193 मुलख़्ख़सन) ''गुनाह पर इसरार करना'' के मा'ना के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि : इसरार की ह़द येह है कि गुनाह को बार बार करे और दिल में बेबाकी (या'नी बे ख़ौफ़ी) मह़सूस करे। (اشعۃ اللمعات، 2/258) ''**फ़तावा शामी**'' में है : इसरार की ह़द येह है कि वोह गुनाह की परवा किये बिग़ैर बार बार सग़ीरा (या'नी छोटे गुनाह) को करे। (فتاویٰ شامی، 3/520) जो गुनाहे सग़ीरा किया उस से तौबा कर लेने से इसरार से बाहर निकल आता है चुनान्चे ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस शख़्स ने इस्तिग़्फ़ार कर लिया उस ने अपने गुनाह पर इसरार नहीं किया अगर्चे वोह दिन में सत्तर (70) बार गुनाह करे।

(ابوداود،2/120،حدیث:1514) ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के बारे में फ़रमाते हैं : (येह शर्त़ है कि) ब वक़्ते तौबा गुनाह से बाज़ (या'नी दूर) रहने का पूरा इरादा हो और अगर तौबा के वक़्त ही येह ख़याल है कि गुनाह करता ही रहूंगा, तो येह तौबा नहीं बल्कि (مَعَاذَاللہ) इस्लाम का मज़ाक़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/364)

गुनाह को ह़लाल समझना

सुवाल : गुनाह को ह़लाल समझना कैसा ?

जवाब : किसी भी सग़ीरा या कबीरा (या'नी छोटे या बड़े) गुनाह को ह़लाल समझना कुफ़्र है जब कि उस का गुनाह होना दलीले क़त़ई (या'नी आयते क़ुरआनी या ह़दीसे मुतवातिर या इज्माए़ उम्मत) से साबित हो इसी त़रह़ गुनाह को हलका समझना भी कुफ़्र है। (منح الروض،ص423)

ऐ अल्लाह पाक की रह़मत के त़लब गार इस्लामी भाइयो ! ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र कीजिये ! ख़ुदा न ख़्वास्ता कुफ़्र पर ख़ातिमा हो गया तो कहीं के न रहेंगे। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم ईमान की ह़िफ़ाज़त की बहुत फ़िक्र रखते थे। चुनान्चे दो वाक़िआ़त मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ ......फिर रोने लगे (वाक़िआ़)

ह़ज़रते ह़बीब अ़जमी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : जिस शख़्स का ख़ातिमा لَآاِلٰہَ اِلَّا اللہ (कलिमए तौह़ीद) पर होता है वोह जन्नत में दाख़िल होता है। फिर रोने लगे और फ़रमाया : कौन मेरे लिये ज़मानत (Guarantee) देता है कि मेरा ख़ातिमा لَآاِلٰہَ اِلَّا اللہ पर होगा। (تنبیہ المغترین،ص161)

﴾2﴿ एक शख़्स जहन्नम से एक हज़ार साल बा'द निकलेगा

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : हमें येह बात पहुंची है कि एक शख़्स **एक हज़ार साल** बा'द जहन्नम से निकलेगा। फिर

फ़रमाया : काश ! वोह शख़्स मैं होता क्यूं कि जहन्नम से उस का निकलना यक़ीनी है। (या'नी उस का ईमान पर ख़ातिमा होना तै है) ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه येह ह़िकायत बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : ऐ भाई ! अपने नफ़्स को दुन्यवी उमूर में सिर्फ़ ज़रूरते शरइय्या के मुत़ाबिक़ मश्ग़ूल रख, हो सकता है तुझे ग़फ़्लत की ह़ालत में मौत आ जाए, और यूं तुझे दोनों जहानों में नुक़्सान उठाना पड़े। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى (تنبیہ المغترین، ص161)

("कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मज़्मून ख़त्म हुवा, कहीं कहीं थोड़ा सा फ़र्क़ किया गया है)

ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना पढ़ूं कलिमा जब निकले दम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मामूं की इन्फ़िरादी कोशिश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहन्नम का ख़ौफ़ बढ़ाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने का ज़ेहन बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के दीनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये। आप की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है। चुनान्चे एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मुश्कबार दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले शबो रोज़ गुनाहों में बसर करते थे, मां बाप की ना फ़रमानी करते उन का दिल दुखाते, मह़ल्ले दारों को त़रह़ त़रह़ से तंग करते, फ़िल्में ड्रामे देखना, गाने बाजे सुनना उन का मह़बूब मश्ग़ला था। बुरे दोस्तों की सोह़बत में रहने की वज्ह से शराब, हेरोइन और मुख़्तलिफ़ नशों के आ़दी हो चुके थे। उन के करतूतों का पता जब उन के मामूं को चला जो दा'वते इस्लामी के दीनी

माहोल से वाबस्ता थे, तो उन्हों ने उन को बहुत समझाया और बड़ी महब्बत से इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत पर राज़ी किया और अपने साथ इज्तिमाअ़ में ले गए। इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर उन्हें हाथों हाथ आ़शिक़ाने रसूल के साथ राहे ख़ुदा के सफ़र पर तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में रवाना कर दिया। आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से उन तीन दिनों में वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा और बहुत कुछ सीखने को मिला, उन्हें अपने गुनाहों पर शरमिन्दगी होने लगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई। वोह आ़शिक़ाने रसूल के हुस्ने अख़्लाक़ और मिलन्सारी से बेहद मुतअस्सिर हुए और हाथों हाथ 63 दिन के मदनी तरबियती कोर्स के लिये फ़ैज़ाने मदीना रवाना हो गए।

बुरी सोहबतों से कनारा कशी कर के अच्छों के पास आ के पा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 646)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

दौराने नमाज़ बिच्छू ने 40 डंक मारे (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बचपन में देखी हुई एक इ़बादत गुज़ार ख़ातून मुझे अच्छी त़रह़ याद हैं। ब ह़ालते नमाज़ बिच्छू ने उन्हें चालीस (40) डंक मारे मगर उन की ह़ालत में ज़रा भी फ़र्क़ न आया। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुईं तो मैं ने कहा : अम्मां ! इस बिच्छू को आप ने हटाया क्यूं नहीं ? जवाब दिया : साह़िब ज़ादे ! अभी तुम बच्चे हो, येह कैसे मुनासिब था ! मैं तो अपने रब के काम में मश्ग़ूल थी, अपना काम कैसे करती ? (کشف المحجوب، ص332)

नमाज़ में आंखें बन्द न करो

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا बयान करते हैं कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई **नमाज़** में खड़ा हो तो अपनी आंखें बन्द न करे। (معجم کبیر، 11/29، حدیث:10956)

नमाज़ में आंखें बन्द रखना यहूदियों का फ़े 'ल है

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : **नमाज़** में मजबूरी के बिग़ैर आंखें बन्द रखना मक्रूहे तन्ज़ीही है क्यूं कि येह यहूदियों का फ़े'ल (या'नी काम) है, अलबत्ता **ख़ुशूअ़** में इज़ाफ़ा होता हो और दिल ह़ाज़िर रहता हो तो अब आंखें बन्द करना मक्रूह नहीं। (فیض القدیر، 1/530، تحت الحدیث:785)

आंखें बन्द रखना कब बेहतर होता है

बहारे शरीअ़त में है : नमाज़ में आंख बन्द रखना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है, मगर जब खुली रहने में **ख़ुशूअ़** न होता हो तो बन्द करने में ह़रज नहीं, बल्कि बेहतर है। (बहारे शरीअ़त, 1/634)

नमाज़ में इधर उधर देखने का मस्अला

दौराने नमाज़ इधर उधर मुंह फेर कर देखना मक्रूहे तह़रीमी (ना जाइज़ व गुनाह) है, कुल (या'नी पूरा) चेहरा फिर गया हो या बा'ज़ (या'नी कुछ) और अगर मुंह न फेरे, सिर्फ़ कनख्यों (या'नी तिरछी नज़रों) से इधर उधर बिला ह़ाजत देखे, तो कराहते तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़रज़े सह़ीह़ से हो तो अस्लन (या'नी बिल्कुल) ह़रज नहीं, (नमाज़ में) निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाना भी मक्रूहे तह़रीमी (ना जाइज़ व गुनाह) है।

(बहारे शरीअ़त, 1/626)

अल्लाह को गोया देख रहे हो

बुख़ारी शरीफ़ की एक त़वील ह़दीस में येह भी है : ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि "**एह़सान**" क्या है ? रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ، فَاِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ या'नी (एह़सान येह है कि) **अल्लाह** पाक की इ़बादत ऐसे करो गोया (या'नी जैसा कि) तुम उसे देख रहे हो अगर येह न हो सके तो येह यक़ीन रखो कि वोह तुम्हें देख रहा है।

(بخاری،1/31،حدیث:50)

ऐ गुनाह करने वाले ख़बरदार ! अल्लाह देख रहा है

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! इ़बादत करने वाला इस त़रह़ इ़बादत करे गोया वोह **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** को देख रहा है। येह अख़स्सुल ख़वास या'नी ख़ासों में से मख़्सूस बन्दों का मक़ाम है। ज़हे क़िस्मत ! हमें भी येह मक़ाम ह़ासिल हो जाए वरना येह भी सआ़दत की बात है कि **नमाज़** व इ़बादत में येह तसव्वुर बंधा रहे कि **अल्लाह** पाक देख रहा है ! बल्कि काश ! हर घड़ी येही ख़याल जमा रहे कि बेशक **अल्लाह** देख रहा है ! यक़ीनन **अल्लाह** देख रहा है ! हर ह़ाल में **अल्लाह** देख रहा है ! इस त़रह़ اِنْ شَآءَ اللّٰه गुनाहों से बचने का ख़ूब सामान होगा। पारह 4 **सूरतुन्निसाअ** की पहली आयत में इर्शादे रब्बानी है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝﴾(پ4،النساء:1)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है।

"अल्लाह आस्मान से देख रहा है" कहना कैसा ?

ऐ अल्लाह पाक से डरने वालो ! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त बहर सूरत देख रहा है ! ताहम येह ज़ेह्न में रखना ज़रूरी है कि **अल्लाह** करीम

मकान और सम्त (Direction) से पाक है । इस सिल्सिले में **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की 692 सफ़्हात की किताब, "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्हा 104 ता 109 पर है :

सुवाल : बद निगाही करने वाले को डराने के लिये येह कह सकते हैं या नहीं कि **अल्लाह** करीम **आस्मान से देख रहा है ।**

जवाब : नहीं कह सकते कि येह **कुफ़्रिय्या जुम्ला** है । "फ़तावा आ़लमगीरी" जिल्द 2 सफ़्हा 259 पर है : "**अल्लाह** पाक आस्मान से या अ़र्श से देख रहा है" ऐसा कहना **कुफ़्र** है । (فتاوٰی ہندیہ،2/259) हां बद निगाही बल्कि किसी भी त़रह़ का गुनाह करने वाले को येह एह़सास दिलाया जाए कि "**अल्लाह पाक देख रहा है ।**" जैसा कि पारह 30 **सूरतुल अ़लक़** की 14वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है : ﴿اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰى ﴿۱۴﴾﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या न जाना कि **अल्लाह** देख रहा है ।

हज़ार ह़ज से बेहतर अ़मल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! ह़क़ीक़ी मा'नों में हमारे ज़ेह्न में हर वक़्त येह बात जमी रहे कि **अल्लाह करीम हमें देख रहा है** अगर वाक़ेई येह तसव्वुर अच्छी त़रह़ क़ाइम हो जाए तो फिर गुनाह नहीं हो सकते । ह़ज़रते **इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ह़ुसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : "एक बार बैठना **हज़ार ह़ज** से बेहतर है ।" इस एक बार बैठने से मुराद येही है कि तमाम तर तवज्जोह जम्अ़ कर के **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपने आप को ह़ाज़िर तसव्वुर करना (कि **अल्लाह** करीम मुझे देख रहा है) । (رسالہ قشیریہ، ص321)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

आंखों में आग की सलाई फिराई जाएगी

काश ! निगाहों की हि़फ़ाज़त की आदत बन जाए, यक़ीनन बद निगाही का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ नक़्ल करते हैं : "जिस ने ना महरम से आंख की हि़फ़ाज़त न की बरोज़े क़ियामत उस की आंख में आग की सलाई फिराई जाएगी।" (بحر الدموع، ص172)

आंखों के क़ुफ़्ले मदीना का एक मदनी नुस्ख़ा

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते **जुनैद बग़दादी** رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मैं आंखें नीची रखने की आदत बनाना चाहता हूं, कोई ऐसी बात इर्शाद फ़रमाइये जिस से मदद ह़ासिल करूं। फ़रमाया : येह ज़ेहन बनाए रखो कि **मेरी नज़र किसी दूसरे को देखे इस से पहले एक देखने वाला** (या'नी **अल्लाह** पाक) **मुझे देख रहा है ।** (احیاء العلوم، 5/129)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा

बयान किया जाता है कि ह़ज़रते ह़स्सान बिन अबू सिनान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ नमाज़े ईद के लिये गए। जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो आप की अहलिया (या'नी बीवी) कहने लगी : आज आप ने कितनी औ़रतें देखीं ? आप ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इसरार किया तो आप ने फ़रमाया :

घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने (पांव के) **अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा।** (کتابُ الْوَرَع مع موسوعۃ امام ابن ابی الدنیا، 1/205)

سُبْحٰنَ اللہ ! **अल्लाह** वाले का बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखने से इस लिये बचना मरह़बा ! कि मबादा (या'नी कहीं ऐसा न हो कि) शर्अ़न जिस की इजाज़त न हो उस पर नज़र पड़ जाए ! (गुज़रे हुए नेक बन्दों की एक अ़लामत बयान करते हुए) ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : नेक लोग फ़ुज़ूल इधर उधर देखने को ना पसन्द करते थे। (کتاب الورع مع موسوعۃ امام ابن ابی الدّنیا، 1/204)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہ وسلم

कोई देख तो नहीं रहा !

ह़ज़रते फ़रक़द सबख़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि उसे कोई (आदमी) नहीं देख रहा तो वोह गुनाह कर डालता है। **अफ़्सोस !** कि वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर **अल्लाह करीम देख रहा है** इस बात का लिह़ाज़ नहीं करता। (احیاء العلوم، 5/130)

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह — वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख — सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 167)

(“कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” का मज़्मून ख़त्म हुवा, कहीं कहीं थोड़ी सी तब्दीली की गई है)

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ का परचा काम आ गया (वाक़िआ़)	1	एक शख़्स जहन्नम से एक हज़ार साल बा'द निकलेगा	10
ख़ुशूअ़ की ता'रीफ़	1	मामूं की इन्फ़िरादी कोशिश	11
नमाज़ में "ख़ुशूअ़" मुस्तह़ब है	2	दौराने नमाज़ बिच्छू ने 40 डंक मारे (वाक़िआ़)	12
आग लग गई मगर नमाज़ में मश्ग़ूल रहे !	3		
चार मुख़्तसर वाक़िआ़त	3	नमाज़ में आंखें बन्द न करो	13
अल्लाह पाक ऐसी नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता	4	नमाज़ में आंखें बन्द रखना यहूदियों का फ़े'ल है	13
नमाज़ में आंसू बहते रहते	4	आंखें बन्द रखना कब बेहतर होता है	13
नमाज़ में ज़ाहिरी व बात़िनी ख़ुशूअ़ किसे कहते हैं	4	नमाज़ में इधर उधर देखने का मस्अला	13
		अल्लाह को गोया देख रहे हो	14
नमाज़ कैसी होनी चाहिये !	4	ऐ गुनाह करने वाले ख़बरदार ! **अल्लाह** देख रहा है	14
ह़ज़रते ह़ातिमे असम की नमाज़ का अन्दाज़	5		
जन्नत वाजिब हो जाती है	6	"**अल्लाह** आस्मान से देख रहा है" कहना कैसा ?	14
जन्नत वाजिब होने का मत़लब	6		
ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ना गुनाहों का कफ़्फ़ारा	7	हज़ार ह़ज से बेहतर अ़मल	15
रुकूअ़ से मुराद यहां पूरी नमाज़ है	7	आंखों में आग की सलाई फिराई जाएगी	16
जान बूझ कर गुनाह करना	8		
गुनाह की ता'रीफ़	8	आंखों के क़ुफ़्ले मदीना का एक मदनी नुस्ख़ा	16
गुनाहे सग़ीरा पर इसरार के मा'ना	9		
गुनाह को ह़लाल समझना	10	नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा	16
फिर रोने लगे (वाक़िआ़)	10	कोई देख तो नहीं रहा !	17

अगले हफ़्ते का रिसाला

Kya Tangdasti Bhi Nemat Hai ? (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 353
Weekly Booklet : 353
क्या तंगदस्ती भी ने'मत है ?
सफ़्हात 20
इन्सान किस लिये पैदा किया गया ? 02
जंगल में घी और शहद की तमन्ना 05
तंगदस्ती की शिकायत करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश 09
दो चीज़ें जवान रहती हैं 15
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी